कांचीनाथ झा 'किरण'–जीवन ओ साहित्य

कमलेश मॉझी Net. JRf

कनीय शोध गवेषक वि० वि० मैथिली विभाग कामेश्वरनगर दरभंगा

डा० कांचीनाथ झा 'किरण' सरिसब परिसरेक नहि समग्र मिथिलांचलक एक अमर विभूतिक रूप मे प्रख्यात छथि। हुनक जन्म लोहना रोड ओविदेश्वरक मध्य धर्मपुर ग्राम मे 1906 ई० मे भेल छल। हुनक पिताक नाम छल पण्डित मुकुन्द झा। किरणजीक जन्मक उपरान्त ज्योतिषीक भविष्यवाणी छल जे ई निर्धन रहताह आ' हिनका विद्याक जोग नहि छन्हि। किन्तु किरणजी अपन अध्यवसाय ओ निरंतर उच्चतर विद्यार्जन– प्रवृत्ति सँ ज्योतिषीक दूहू भविष्यवाणी के असत्य प्रमाणित कए देलन्हि।

किरणजी 1928 ई० मे प्रथम श्रेणी मे मैट्रिक पास कए 1929 ई० मे दरभंगा मेडिकल स्कूल मे नामांकन हेतु चयनित भेलाह किन्तु अर्थाभाव सँ प्रवेश नहि पाबि सकलाह। 1930 ई० मे काशी हिन्दू विश्वविद्यालय मे नामांकन कराओल किन्तु 1933 ई० मे कलकत्ता विश्वविद्याालय स्थानान्तरित भए आबि गेलाह। ओतहि सँ 1935 ई॰ मे एल० ए० एम० एस० (लाइसेन्सियेट इन आयुर्वेदिक मेडिसीन एण्ड सर्जरी) परीक्षोत्तीर्ण भए 1936 ई० मे काशीक रानी चन्द्रावती चिकित्सालय मे चिकित्सक पद पर आ' पुनः किछु दिनक पश्चात् रानी चन्द्रावती श्यामा आयुर्वेदिक अस्पतालमे अध्यापक पद पर नियुक्त भेलाह। किछुए वर्षक पश्चात् हुनका गाम आबए पड़लन्हि। ओ पहिने गामहिमे आ' पाछू किछु वर्ष सरिसब मे आयुर्वेदिक चिकित्सकक रूप मे क्लिनिक खोलि कार्य कएलन्हि।

1948 ई० मे सरिसबक लक्ष्मीश्वर एकेडमीमे हुनक नियुक्ति शिक्षक–पद पर भेलन्हि। एक यशस्वी शिक्षक रूप मे प्रख्यात भए निरन्तर अपन योग्यता बढ़एबाक प्रवृत्ति बनल रहलन्हि। सरिसब–पाहीक महाराज लक्ष्मीश्वर सिंह महाविद्यालय–जकर स्थापना आ' विकासक लेल ओ भिक्षाटन कएने छलाह–ओतहि सँ बिहार विश्वविद्यालय अन्तर्गत बी० ए० पास कएलन्हि। 1964 ई० मे अठावन वर्षक आयु मे ओ बिहार विश्वविद्यालय सँ उत्कृष्ट स्थान मे मैथिली मे एम० ए० कएलन्हि। कठिन साधन कए वर्णरत्नाकरक काव्य शास्त्रीय अध्ययन विषय पर पी० एच० डी० सेहो कएलन्हि। अपन लगन सँ ओ सी० एम० कॉलेज दरभंगा मे किछु वर्ष शिक्षक रूप मे निष्ठापूर्वक कार्य कएलन्हि। अपन कर्मठता ओ विद्वत्ता सँ ओ अनेक शोध–छात्रक पर्यवेक्षण ओ मार्गदर्शन कएलन्हि। हुनका लग विभिन्न मैथिली पत्र–पत्रिकाक क्रमबद्ध दुर्लभ संग्रह सुरक्षित छल। ओ ककरहु अपन पत्र–पत्रिका वा पोथी साधारणतया घर लग जएबाक लेल नहि दैत छलथिन्ह तेँ जिज्ञासु शिक्षा–प्रेमी दूर–दूर सँ हुनक आश्रम मे आबि हुनके ओतएं डेरा खसाए अपन अभीष्ट सामग्री लिपिबद्ध कए लए जाइत छलाह। 1

डा० किरणजी छात्रावस्थहिसँ मैथिली आन्दोलन मे अग्रसर छलाह आ' मातृभाषाक सेवाक हुनक प्रवृत्ति निरन्तर विकसित होइत गेल। काशीमे ओ सभ भाषाक संगठन देखलन्हि किन्तु अपन भाषाक कतहु अस्तित्व नहि छल। अपन सहयोगी सभक संग ओ अभियानक श्रीगणेश कएलन्हि। हिन्दू विश्वविद्यालय मे मैथिलीक पठन–पाठनक व्यवस्था लेल ओ छात्र–दलक नेता छलाह। ओ एक छात्र–प्रतिनिधि–मंडलक अगुआ भए पं० मदन मोहन मालवीय सँ भेट कए मैथिली केँ हिन्दी सँ भिन्न एक स्वतन्त्र–समृद्ध भाषा प्रमाणित कएलन्हि। म० म० बालकृष्ण मिश्र तथा काशीक अन्यान्य मैथिल विद्वानक सहयोग प्राप्त कए ओ मैथिलीक स्वीकृति लेल सभकेँ सङोरि आन्दोलन चलाओल। नवम्बर 1933 मे हिन्दू विश्वविद्यालयक सिनेट द्वारा मैथिली पाठ्य–विषयक रूप मे स्वीकृति भेल। किन्तु तत्काल समस्या आबि गेल जे पर्याप्त पाठ्य–पुस्तक सभ कहाँ अछि।[1] एहि लेल सेहो मैथिली विकास समितिक गठन कएल गेल जकर सचिव किरणजी छलाह। काशी मे अद्यावधि ओ समिति छल। 1960 मे राम मन्दिर मे एकर एक बैसार मे सम्मिलित होएवाक सुअवसर हमरहु भेटल अछि। 1930 ई० मे किरणजी मैथिली आन्दोलनक सूत्रपात कएलन्हि। ई निर्विवाद जे काशी प्रवासक अवधि मे हुनक आन्दोलनकारी तथा साहित्यकारक समन्वित व्यक्तित्वक निर्माण भेल।

किरणजी अनुभव कएलन्हि जे काशी आ' कलकत्ता मे मैथिलीक अलख जगओने ओतेक जागरण नहि होएत जतेक गाम–गाम, टोल टोल मे घूमि कए जन–जन के बुझौने। मिथिलांचलक हरबाह–चरबाह सभकेँ विद्यापतिक रंग मे विना रंगने काज नहि चलत। एतदर्थ किरणजी मैथिली आन्दोलनक अग्रिम क्षेत्र सरसिब–पाहीकेँ बनौलन्हि। 1945 ई०क करीब ओ सरिसब–पाही मे अपन चिकित्सालय खोललन्हि आ' विद्यापति–गोष्ठी मे नव जान आबि गेल। ओ अखिल भारतीय मैथिली साहित्य परिषदक महामंत्री छलाह। 1940–50 सँ विद्यापति–गोष्ठक बैसार गाम–गाम मे देसिल बअना सबजन मिट्ठा क प्रचार जोर पकड़ने गेल। महावैयाकरण दीनबन्धु झा, कविशेखरजी, किरणजी, श्री मनमोहन झा, श्री गोविन्द झा, परमानन्द झा, डा० श्री आनन्द मिश्र, डा० श्री कीर्त्यानन्द कुमर जी, श्री बुद्धिनाथ मिश्र, प्रो० श्री मुक्तिनाथ झा, पं० कुंजन झा, पं० दीपक जी, गोपाल बाबू, सतीश्वर झा, रूद्रानन्द मिश्र, श्री जितेन्द्र नारायण झा, विकल बाबू, श्री भवनाथ झा, प्रो० सुशील झा, राजेक मास्टर साहेब, श्री तरूणजी, दयाबाबू, एहि पंक्तिक लेखक प्रभृति अनेक लोक विभिन्न स्थान मे आयोजित सभा मे साइकिल सँ वा पैदल जाए सम्मिलित होइत छलाह। पहिने लग–पासक गाम मे, पाछू दूर–दूर तक ई दल जाए मैथिली आन्दोलनक प्रचार–प्रसार करए लागल।

विद्यापति–गोष्ठीक उत्साही सदस्य विद्यापतिक जन्मभूमि बिस्फीक साहसिक यात्रा कएल आ' ताहिमे सब सँ आगाँ झंडावरदार डा० किरण जी छलाह। अनेक दिन सरिसब वा कोनो अन्य गामसे बैसारक पश्चात् गाम घुरबा मे किरणजी के बिलम्ब भए

जाइन्ह। एक दिन मध्य रात्रि मे ओ घूरल छलाह कि लोहना आ' विदेश्वरक बीच चोर सब हुनका घेरि लेलक। एक गोटे हुनक साइकिल छीनि कहलकन्हि जे संगमे जे किछु अछि से दय दिअ। किरणजी झोड़ा आगाँ बढ़ाए कहलथिन्ह, ''हमरा संग इएह पोथी–पतरा अछि, से लेबह त' लैह। हम त मास्टर छी।'' तावत् एकटा चोर हुनका मुँह पर इजोत देलकन्हि आ' बाजल ''रौ, हिनकर साइकिल द' दहुन। ई त सरिसब स्कूलक गुरूजी थिकाह। पछिला मास ई रैमा स्कूल पर सभा मे गेल छलाह। मुदा बाबू, अहूँ एतेक अबेरकेँ अन्हरिया राति मे नहि चलू। आइ ने हम चिन्हलहुँ। सभ तरहक लोक होइत छैक।'' ताहि दिन सँ ओ आर निर्भय भए अबैत–जाइत रहलाह। अनेक बेर देखियो केँ चोर सभ हुनका नहि टोकन्हि। ओहो सभ बूझि गेल छल ई गुरूजी मानएबला नहि।

किरणजीक गृहस्थी व्यवस्थित आ' अनुशासित रहल। ओ अपन भाग्य–लेखकेँ अपन कर्मठताक हाथ सँ लिखि आवश्यकताक अनुकूल धन, पर्याप्त विद्या आ' यश अर्जित कएलन्हि। एहिमे हुनक धर्मपली ललिता देवीक बड़ योगदान छलनि। ओ बड़ दयालु, मृदुभाषिणी ओ सृजनशीला छलीह। अतिथि–अभ्यागत सँ कहियो घबड़ाइबाली नहि छलीह। पतिक निधनक पश्चातो अनेक वर्ष धरि ओ पुतोहु सभक संग गृहस्थीक सुसंचालन कएलन्हि। हुनक ज्येष्ठ पुत्र डॉ० श्री कैलाश बाबू मैथिलीक नीक विद्वान् छथि। दोसर पुत्र प्रो० श्री केदारनाथ बाबू राजनीति शास्त्रक लब्धप्रतिष्ठ प्राध्यापक ओ सम्प्रति हर्षपति सिंह कॉलेज, मधेपुरक प्रभारी प्रधानाचार्य छथि। कनिष्ठ पुत्र श्री केसरीनाथ झा आइ० ए० एस० शिवहरक जिलाधिकारी छथि। हुनक सभ पुत्र मे पिताक स्पष्टवादिता, सदाचार ओ निर्भयताक सद्गुण विद्यमान अछि।

किरणजीक गतिशीलता निरंतर बढ़ैत गेल। हुनक संग पुरनिहार श्री जितेन्द्र नारायण झा, रूद्रानन्द मिश्र तथा अनेक अनेयायी लोकनि सेहो बहेड़ा, कौर्थु, महिनाम, पोहद्दी प्रभृति सुदूर अंचल मे मैथिलीक कोनो आयेजन मे उपस्थित होथि आ' परस्पर सौहार्द तथा आवागमनक क्रम बनल रहल। जेठक जरैत दोपहरिया हो कि पावसक झहरैत मेघ, शरदक इजोरिया हो कि शिशिरक कँपैत रात्रि किरणजीक कार्यक्रम स्थगित होमय नहि जनैत छल। एक बेर निश्चित भए गेल तँ स्वर्ण–रेख खिँचा गेल। ओहिमे कोनहु प्रकारक हेर–फेर नहि भए सकैत छल। तैं कोनो आयोजक हुनक कार्यक्रम सँ निश्चिन्त रहैत छलाह आ' संगहि हुनका समय देलाक बाद अटल रहैत छलाह। स्वनामधन्य सुमनजी, मधुपजी, मणिपद्मजी, शैलेन्द्र बाबू, भोलालाल दास, बहेड़जी, श्री अमरजी, श्री चन्द्रभानु सिंह जी प्रभृति अनेक कृती साहित्यकार ओ मैथिलीक छत्रधारी विद्वान सभ सँ हिनक सम्पर्क निरन्तर अटूट बनल रहल। आदरणीय श्री जितेन्द्र नारायण बाबू वर्त्तमानहु मे ओहि पुरातन सम्बनध कँ जिऔन छथि से प्रसत्रताक विषय अछि। 2

किरणजीक व्यक्तित्व जहिना बहुआयामी छल तहिना हुनक प्रतिभा सेहो बहुमुखी छल। मिथिला मोद तथा मैथिल सुधाकर किरणजी, सुमन जी ओ मधुपजी कँ कवि, कथाकार, नाटककार, निबन्धकार ओ आलोचक बना देलक। ओहि दूनू पत्रिकाक लेल हिनका लोकनिकेँ सभ विधाक रचना लिखि केँ देमए पड़न्हि। हुनक बहुमुखी प्रतिभाक विकासक श्रेय एहि पत्रिकाद्वय केँ बहुत अंश मे छैक। एतबे नहि। ''आन्दोलनात्मक ओ सर्जनात्मक भाषा–सेवाक जे ई दुइ गोट माध्यम अछि, किरणजी दुनू क्षेत्र मे अग्रिम स्थानक अधिकारी छथि।''[2] कथा– किरण पर हुनका 'वैदेही पुरस्कार' आ पराशर महाकाव्य पर 1989 ई० मे मरणोपरन्त साहित्य–अकादेमी पुरस्कार भेटलन्हि। हुनक नओ गोट रचना प्रकाशित छन्हि। एकर अतिरिक्तो हुनक किछु रचना विविध विधा मे पत्र–पत्रिका मे प्रकीर्ण अछि [देखू रचना–सूची परिशिष्ट मे]। मधुपजी ओ सुमनजी किरणजीक अभिन्न मित्र छलथिन्ह। हिनके लोकनिक अनुकरण पर ओहो अपन उपनाम 'किरण' राखि कविता प्रणयन करए लगलाह।

प्रति लोकक उदासीनता केँ दूर कऽ अनुराग जगयबाक सदुद्देश्य संग रचित एहि गीत सभ लेल लोकग्राही होयब आवश्यक छलैक आ से आपरम्परिक शैली मे नितांत नव कथ्य संग लिखित गीतक लेल संभव नहि छलैक। ओना 'किरण–कवितावली' मे 'किरण'क एहनो एकटा गीत अछि जकर स्वर भक्तिपरक तथा भास ओ शिल्प पारम्परिक होइतो कथ्य कतौ सँ पारम्परिक नहि लागत–

'किरण'क जन्म एकटा नैष्ठिक मैथिल ब्राह्मणक परिवार मे भेल छल, जकर मिथिलाक तत्कालीन समाजक सभसँ आदरणीय श्रोत्रियवंश सँ सम्बन्ध रहैक। सामाजिक कुलीनता सङ यदि वैभवक पुट हो तऽ परिवारक जीवन सहज ओ व्यवस्थित होइत छैक, अन्यथा परिवारक सदस्यक स्वाभाविक विकास बाधित होइछ। 'किरण' एकटा एहन परिवार लेमे जन्म लेने रहथि, जे कुलीन तऽ छल, मुदा आर्थिक विपन्नता सँ ग्रस्त छल। एहन परिवार मे पोसायल अतिशय संवेदनशील 'किरण' लेल सामाजिक व्यवस्थाक प्रति विद्रोही बनब स्वाभाविक रहनि। जाहि सामाजिक व्यवस्था मे अर्थाभावक कारण ओ 18 वर्षक अवस्था मे प्रथमा, 22 वर्षक अवस्था मे मैट्रिक पास कयजनि आ आगाँ सेहो कहियो अपन अध्ययन नियमित ढंग सँ जारी नहि राखि सकलाह, तकरा प्रति हुनका मोन मेविक्षोभ होयब स्वाभाविक छल। सामाजिक विषमताक प्रति 'किरण'क मोनक क्षोभ आगाँ आर बढ़ि गेलनि, जसन मातृभाषाक प्रेमस विह्वल तथा आन्दोलित भऽ ओ भषाक सम्यक विकास हेतु वर्गक सहभागिता अनिवार्य बुझननि जे समाजक वृहत्तर वर्ग हाइतो अशिक्षा तथा अकिञ्चनताक समाज मे पेक्षितओ प्रताड़ित होइत छल।

मैथिली साहित्यक उत्थान आ उत्थानक संग एकर विकास मध्यकालमे भेल। मध्यकालमे प्रायः सम्पूर्ण भारतीय भाषा अपन क्षेत्रक बोलीक रूपमे छल ओ लिखित रूपमे नहि आबि सकल। देशमे इस्लाम शासन छल तैँ मोगल सल्तनतक परचम सम्पूर्ण भारतवर्षमे सुदृढ़ रूपेँ व्याप्त छल। ई बात तँ सर्वमान्य अछि जे मिथिला आदिकालसँ विद्याक केन्द्र रहल।

जे किछु रचना होइत छल से संसकृतमे। बौद्ध, जैन मतावलम्बीकेँ मिथिलांचलमे पंडितलोकनि फटकय नहि देलक। इस्लामक सूफिवाद आंशिकरूपसँ भारतमे अयलैक मुदा ओ फारस आ मध्यएशियामे अपन पैठ बनौलक। इसलामक शासन छलैक तेँ फारसी आ उर्दूक शब्द मैथिलीक बोलीमे सनिहा गेल। देखल गेलैक अछि जे जतय सामन्तवाद बहुत दिन तक अपन सामन्ती स्वरूपकेँ अक्षुण रखलक ओतय साहित्यक सृजन अधिक भेल आ रचनाक स्वरूप सेहो उच्चस्तरक भेल। सामन्तवाद सेहो दू तरहक छल। एकटा मूल सामन्तवाद आ बादमे दोसर परवर्ती सामन्तवाद। मूल सामन्वद भेल जहिमे राजा अपन इच्छासँ राजाकाज चलौलनि आ जखन हुनकासँ नहि सम्हरलन्हि वा राजकविस्तार भऽ गेल तँ ओ जमींदार वा ताहि समयक बाहुबलीमे ओकरा विभाजित कयजन्हि। जींदार सभ लाठी हाथे कर वसूल करैत छलाह, प्रजा पर अत्याचार होइत छल आ कर वसुलीकऽ अपन राजाकेँ दैत छलाह। एकरा परवर्ती सामन्तवाद कहल गलैकै ई क्रम बादो मे अंग्रेजी हुकुमतक काल धरि रहल। अंग्रेज गवर्नर कार्नवालिस साहेब परमानेन्ट सेटलमेन्ट (Parmanent Settlement) कऽ जमींदार लोकनिकेँ बहुत निरंकुश आ धनवान बनौलनि।

मिथिलामे सामन्तवाद मूलरूपमे बहुतो बर्षधरि रहलैक तेँ एहिठाम साहित्य सृजन ठीकसँ भेल। महाकवि विद्यापतिसँ पूर्व ज्योतिरीश्वर ठाकुर वर्णरत्नाकर लिखलन्हि। वर्णरत्नाकरसँ ओहि समयक मिथिलाक सामाजिक व्यवस्थाक पूर्ण आकलन होइछ। 'नगर अयसन', 'लोक अयसन' लिखिकेँ ओहि समयक सामाजिक व्यवस्था समाजक आर्थिक स्थितिक इतिहास बुझल जाइत छल। हिन्दी साहित्यमे तीन काल भारतीय समाजक मध्यकालमे अबैत अछि। विद्वानलोकनि ओकरा वीरगाथा मानल, भक्तिकाल आओर रीतिकालक रूपमे सेहो मानलैन। एहि तीन कालेक कवि वा लेखक लोकनिक कविता ओहि क्षेत्रक अछि जतय सामन्तवाद व्यबस्थित रूपमे पूर्णसत्ताक संग छल। एहि तीनू कालक काव्यक विकासमे बिहारक योगदानमे मिथिलाक योगदान सभसँ अधिक अछि। मिथिलामे दर्शन, साहित्य, संगीत आ लोक संस्कृतिक अनेको रूपमे विकास भेल किएक तँ मिथिलामे एकटा सुव्यवस्थित आ स्थिर सामन्तीसत्ता बहुतो वर्ष रहलैक।

सामन्ती व्यवस्थामे सांस्कृतिक सृजनक केन्द्र होइछ। राजदरवार, धार्मिक मंदिर–मठ आ लोक जीवन वा गाम घरक समाज। सामन्ती व्यवस्थामे राज दरबार अनेक रूपे सांस्कृतिक केन्द्र बनैत अछि किएक त विद्वान कवि आ कलाकार लोकनि ओतय आश्रय पबैत छलाह आ साहित्य मौखिक अवस्थासँ बाार आबि लिखित अवस्थामे अबैत छल। विद्यापतिक कीर्तिलता आ कीर्तिपताका एकर प्रामाणिक उदाहरण अछि। यदि विद्यापति कीर्तिलता, कीर्तिपताका नहि लिखतैथ तँ कीर्तिसिंहक विषयमे शंका होइते ई जे के छलाह ? केहन छलाह ? राजाशिवसिंह, कीर्तिसिंह इतिहासक अन्वेषणक पात्र रहितैथ। साहित्य सृजनक दोसर केन्द्र छल। मठ आओर मंदिर जतय अधिकांशतः धार्मिक साहित्यक रचना भेल। एहि दुनूसँ अलग मौखिक आ लिखित रूपमे साहित्य लोकजीवनमे सेहो लिखल गेल, जकरा मोटा–मोटी लोक संस्कृति कहल गेल।

समय बदललैक, सत्ता बदललैक आ लोकक जीवन स्तरक स्वरूप सेहा बदलैत गेलैक तेँ साहित्यकारक प्रतिभा पर सेहो एकर प्रभाव पड़ल। एहिमे दू प्रकारक साहित्य सृजन होइत रहल। एकटा अछि परम्परागत साहित्यक निर्वाह करी। आ दोसर स्वच्छन्द रूपे रचना करी। परम्परागतरूपेँ लिखनाय कठिन होइत छल। कारण काव्य लिखबाक किछु अनुशासन छैक जकरा हेतु बिटियाकेँ पढ़नाय आ संगहि नीक गुरूक आवश्यकता सेहो छल। जेना फूरत तहिना लिखब ओ सुगम छल। फरिआ के कही तँ शास्त्रीय संगीत कठिन होइत छैक आ युगम संगीत वा सिनेमाक गीत बहुत हल्लुक होइत छैक। अहू हेतु भावना वा तुकबंदीक ज्ञान आ ओकर प्रयोग मिलौनाय आवश्यक। तेँ अधिकांश भावप्रधान सुगम साहित्यक सृजन होमय लागल जे मैथिली साहित्यक विकासमे बहुत सहायक भेल। साहित्य यदि स्वच्छन्द नहि होइते तँ महाकवि विद्यापतिक बाद मैथिली साहित्यक विकास आंशिक रूपे होइते। विद्यापति वीरगाथाकाल, भक्तिकाल, रतिकाल आ लोक संस्कृतिक कवि छलाह। हुनक लिखल कीर्तिलता, कीर्तिपताका, नचारी, महेशवाणी आ श्रृंगाररससँ ओतप्रोत हुनक रचना मैथिली साहित्यक मूल धरोहर अछि। विद्यापत्तिक बाद मैथिली साहित्य सुस्त भऽ गेलैक। विद्यापति "FOUR IN ONE" छलाह।

बीसम शताब्दीमे मैथिली साहित्य जागल। अंग्रेजी शिक्षाक प्रभाव सेहो एहि पर पड़ल। भारतक स्वतंत्रता आन्दोलनसँ पूर्व आ स्वतंत्र भारतमे सभ तरहक मैथिली साहित्यमे विकास हुअय लागल। बहुतो रचनाकार भेलाह। मैथिली साहित्य गाम घरक समाज, खेत–खलिहाल, चर–चाँचर पर सेहो केन्द्रित भेल आ संगहि ट्रेनक डिब्बा, वायुयान आ लोकक ड्राइंगरूममे पहुँचि गेल। कहबाक अभिप्राय अछि मैथिली साहित्य समाजक सभ क्षेत्रमे पसरय लागल आ अद्यावधि पसरि रहल अछि। 3

कांचीनाथ झा 'किरण' एहि समयक साहित्यकार भेलाह। ओ मैथिली साहित्यक आधुनिक कालक धरोहर छलाह। हुनक मूल्यांकन करबाक हेतु हुनक बहुआयामी प्रतिभाक चर्चा करब अनिवार्य अछि। किरणजी संस्कृत, अंग्रेजी आ चिकित्सा विज्ञानक जाता छलाह। अपन युवावस्थासँ वृद्धावस्था प्यर्यन्त मैथिलीक सेवक रहलाह 'किरण जी'।

किरणजी मूलरूपसँ स्वभावतः साम्यवादी वा प्रखर समाजवादी छलाह। परम्परागत सामाजिक व्यवस्थाक घोर विरोधी। कर्मयोगी छलाह तेँ खेतक आरि पर जाइत छलाह, हाथो बटबैत छलाह अपन शारीरिक सामर्थ्यक अनुरूप। समालोचक छलाह तेँ मैथिली साहित्यकेँ बिटिया के पढ़ने छलाह। मैथिली साहित्यक पुचार–प्रसार हुअय तेँ गामे–गाम जाकऽ साहित्य सम्मेलन करैत छलाह, करबैत छलाह। आँखि मुनिकेँ परम्परागत बात माननिहार नहि छलाह। बहुत पैघ तार्किक छलाह तेँ गामक रूढ़िबादि पंडितलोकनि हुनकासँ फराके रहैत छलथिन। ओ कहैय छलथिन्ह जे वृद्धावस्थामे दशमीमे दुर्गा पाठ करबाक क्रममे भगवतीसँ पण्डित लोकनि 'पत्नी मनोरमा देहि मनोवृतानुसारिणीम्'' भगवतीसँ किएक याचना करै छी ओहिना के बताह कवि भांग पीबि स्वागत बसन्त छथि गाबि रहल'' हुनक लिखल वास्ववमे तार्किक

अछि। कारण बसन्त ऋतुमे सम्पूर्ण मिथिलांचलक पर्यावरण प्रदूषित भऽ जाइत छैक। पछवा हवा आ नाना प्रकारक रोग व्याधि खासकय ओहि समय डायरिया, कोदवा–दामस प्रकोप पसरैत छैक। वसन्त ऋतु आनक्षेत्रक हेतु ठीक परन्तु मिथिलांचलक हेतु कष्टदायक। तेँ ओ हेमन्त ऋतुक गुणगान करैत ''हेमन्तगीत'' शीर्षक दऽ कविता लिखलैन। प्रायः ओ लोकनि मानसिक आ शारीरिक मादमता पर ध्यान नहि देलथिन। अपन प्रसिद्ध पुस्तक चन्द्रग्रहणमे ओ सामाजिक स्थित आ मनुष्यक मनोदशाकेँ अक्षरशः प्रस्तुत कयने छथि। अपन वास्तविक जीवनमे जेहने स्वच्छन्द छलाह तहिना साहित्य सृजनमे सेहो ओहिना स्वच्छन्द रचनाकार भेलाह। किरणजी एकटा सुयोग्य शिक्षक छलाह। सरिसव हाईसूलिमे विज्ञान आ गणितक अतिरिक्त सभ विषय पढ़बैत छलथिन। वृद्धावस्थामे सी.एम. कॉलेजमे मैथिलीक प्राध्यापक भेलाह। कोनो पद हुनक साहित्यक कृतिक आगाँ गौण छल। ओ मैथिली साहित्य जगतमे बहुतो उच्च स्थान पाबि चुकल छलाह। युवावस्था सँ पचास वर्षसँ ऊपर आयुपर्यन्त सरिसव हाई स्कूलमे शिक्षक रहलाह। ओ व्यावहारिक आ स्वास्थ्यवर्द्धक ज्ञान दैत छलथिन्ह। उजान गामसँ पैदल जाके पढ़यवला छौड़ा सभकेँ कहैत छलथिन्ह जे थोड़ेक बदाम फुलाकेँ रूमाल वा कोनो डिब्बामे किएक नहि अनैत छी टिफिनमे खेबाक हेतु हुनक सोच एतेक दूरगामी छलैन आ बच्चा सभहक स्वास्थ्यक कतेक चिन्ता रहैत छलन्हि। किशोरावस्थामे ओतेक काल भूखल रहत आ पाँच कोस चलत तँ शरीर कमजोर भऽ जेतैक तेँ एहन सुलभ सुझाव दैत छलथिन्ह। कहबाक अभिप्रायः जे ऐहेन ज्ञानी शिक्षक छलाह जे शिष्य सभकेँ पुस्तकक ज्ञान देबाक संगहि ओकर शरीर निरोग रहैक ताहि पर सेहो ध्यान रखैत छलाह।

यदि पाठक लोकनि अतिशयोक्ति नहि मानैत तँ हमर मत अछि जे मैथिली साहित्यमे किरणजीक स्थान समालोचकक रूपमे शीर्षपर अछि। जे स्थसान अंग्रेजी साहित्यमे 'वर्नाड शॉ' के आ हिन्दी साहित्यमे 'नामवर सिंह' के छनि, मैकिली साहित्यमे ओहने स्थानक हकदार ''कांचीनाथ झा 'किरण''' के मानैत छिअन्हि। एहन लेखक अपन लेखनिक माध्यमसँ सामाजिक साँचमे परम्परागत सोचके पुनः सोचबाक हेतु बाध्य करैत छैक वा किंकर्तव्यविमूढ़क स्थितिमे आनि दैत छैक। ई लेखक लोकनिक शक्ति होइछ। एहन शक्ति किरणजीक कलममे अवश्य छलन्हि तेँ सम्पूर्ण मैथिली साहित्यक जगतमे एतेक ख्याति पौलन्हि आ भविष्योमे हुनक पुनर्मूल्यांकन होइते रहत। उजान गामक धर्मपुर टोलक नथू बाबू सम्पूर्ण मिथिलांचलमे किरण रूपमे मैथिली साहित्यमे किरण भऽ चमकलाह ई अजानगामक हेतु गौरवक विषय भेल। एहन बहुआयामी प्रतिभावान लोक सभदिन अमर रहैत अछि हम सभ एहन महापुरूष केक अनेकोबेर नमन करैत छिअन्हि।

किरणजी मानैत छथि जे मिथिलाक समाज विभिन्न आक्रान्ताक शासनसँ प्रभावित भेल अछि। मिथिलाक सांस्कृतिक सम्पदाक विशेषता एवं मौलिकता पतराएल अछि। विशिष्टताक क्षरण भेलैक अछि। से तेहन जे कविकोकिल विद्याापति धरि अपहृत भए गेल छलाह। परिणामतः मैथिल समाजमे हीनताबोध जनमल। अपन भाषा–साहित्य एवं संस्कृतिक प्रति अवहेलनाक भाव घनीभूत होइत रहल। मैथिल समाजक एहि मानसिकतापर व्यंग्य करैत श्यामानन्द झा (मैथिली सन्देश,1932ई.) लिखने छथि – 'देखी समाज अछि जा, बान्ही बखार ने ता, काने कटाय ली तँ कुण्डल गढत्राय की हो? निज भेष ओ विभूषासँ पीठ ओडित्र बैसी, बाजी ने मैथिली तँ, मैथिल कहाय की हो?

असन्तुलित आर्थिक विकास दोसर समस्या अछि। एकर कारण किरणजी गामक वास्तविकतासँ अपरिचित व्यक्ति द्वारा बनौल योजनाक कार्यान्वयन मानैत छथि। शहरूआक आँखि, शहरी भारत एवं ग्रामीण भारतक आर्थिक अन्तर एवं अन्न–वस्त्रादिक अभावसँ ग्रामीण भारतमे प्रतिवर्ष करांड़हु व्यक्तिके प्राण–त्यागैत नहि देखैत अछि। एहन योजनासँ देशक एकभग्गू आर्थिक विकास भेलैक अछि। परिणामतः धनीक औरो धनीक तथा समाजक खगल लोक औरो विन्न होइत गेल अछि। एहि विकासक एक छोड़पर छथि लक्ष्मीक दुलरूआ भुल्लूबाबू आ' दोसर छोड़ पर अछि सोमनाक माइ, पनिभरनी आदि। माघ मासक कनकन पाला एवं कुहेसाच्छन्न दिनमे जाड़े ठिठुरैत सोनमाक माइ सन लोकके जाड़सँ रक्षाक लेल देहपर आँचर मात्र छैक। बहुतोकेँओहो आँचर शिशु–सन्तानक मूतसँ भजले रहैत छैक। देशक एहन आर्थिक विकासक प्रसङ उपन्यासकारक प्रश्न अछि – 'लक्ष्मीक दुलरूआक हेतु सीरकक तरसँ मुहो उघाड़ब कष्टप्रदे बुझना जाइत छल। किन्तु एहि सीरकक सौभाग्य हमर देशमे सैकड़ा कै व्यक्तिकेँ? बड़ कठिने पाँच पुरत!'

सम्प्रति बजारवाद, शहरीकरण, उद्योगीकरण, सूचना प्रौद्योगिकीक प्रभाव, सामाजिक मूल्यक विघटन, आत्मकेन्द्रित होइत लोकक जीवन–दृष्टि आदिक सर्वत्र अनघोल अछि। किन्तु आइसँ अस्सी वर्ष पूर्व कांचीनाथ झा 'किरण' शहरीकरणसँ पसरैत अपसंस्कृति, संरचनात्मक विसङतिसँ बढ़ैत आर्थिक वैषम्य, आ' भाषा–साहित्य एवं संस्कृतिपर आसन्न संकट अकानि लेने छलाह। ओ ईहो अनुभव कए लेने छलाह जे धार्मिक अन्धविश्वास एवं पाखण्ड आर्थिक रूपेँ सुदृढ़ व्यक्तिक सऽह पर लतरैत अछि। ओएह दक्षिणाकामी वर्गकेँ अपन सामाजिक–आर्थिक वर्चस्वक लेल पोसैत–पालैत अछि। भुल्लूबाबूक खुशी भए उद्घोष करब ''सर्वग्रासः सर्वग्रासः'' ओही स्थितिक संकेत थिक। यदि भुल्लूबाबू सन समाजक सुखी–सम्पन्न पण्डित लोक चन्द्रग्रहणक अवसरपर सिमरियामे 'देखैयोग मेलाक' चर्चाक सङ एहन–एहन अवसरपर महिलाक होइत अपहरणक चर्चा सेहो कए दितथि तँ रजनी एहि तरहेँ उत्साहित नहि होइत। धार्मिक अन्धविश्वाससँ समाज सम्प्रति जेना आच्छन्न अछि, से नहि होइत। धार्मिक अन्धविश्वास एवं श्राद्धादि कर्मकाण्डक विरूद्ध किरणजीक मान्यताक नीक जकाँ परिपाक 'पराशर' मे भेल अछि। ऋषि पराशर द्वारा एक बनवासी वृद्धाक प्रति 'माता' सम्बोधनपर ओ व्यंग्य करैत छनि, 'अहाँक माए बाभनि छलीह। ओ उसरगल दुधगरि गाय, छत्ता, जुता सोनाक मुरूत, बढ़ियाँ बिछौनक सङ दगलाहा पाछापर चढ़ि सरग चल गेल होएतीह।' 4

मिथिलाक समाजमे विभिन्न कारणेँ सामाजिक दुर्गुण जड़िआएल छल। स्त्रीशिक्षाक घोर अभाव छलैक। सामाजिक दुर्गुण एवं स्त्रीशिक्षाक अभावसँ समाजमे नारी–समाजक स्थिति दयनीय एवं कारूणिक छल। सभ दुर्गुणक दुष्परिणामकेँ भोगबाक हेतु ओएह वर्ग अभिशप्त छल। किन्तु जखन राष्ट्रीय स्तरपर समाज सुधारक बसात बहल आ' तकर सिहकी मिथिला धरि अएलैक तँ सुधारक चाँकि मिथिलाक समाजहुमे आएल। सुधार ओअए लागल। मुदा, जखन स्वाधीनता आन्दोलन तीव्र भेलैक एवं साम्राज्यवादी बिलेंती शासककेँ अपन शासन–आसन डगमग करैत अनुभव होअए लगलैक आ' अपन नफगर हाट उसरैत देखलक तँ धर्म आ' सम्प्रदायक आधार पर दूगोला करए, अपन गोटी सुतारए लागल। 'मुस्लिम लीग'क पट्ठा सभ द्वारा बाट–घाटसँ हिन्दू महिलाक अपहरण होअए लागल। एहि अपहरणसँ वासनाक तृप्ति होइत छलैक, धर्म परिवर्त्तन कराए अपन जनसंख्यामे बृद्धि करैत छल। ई संस्कृतिपर आघात छल। समाजकेँ अपमानित कए निर्बल करबाक ब्योंत छल। एहि षड्यन्त्र–अभियानमे प्रशासन सतर्क नहि, संलिप्त एवं सहभागी छल। एक अपहर्ताक अपन सहयोगीसँ ई कहब – 'अरे! बड़ाबाबू को नहीं दिखाना है क्या?' एही संलिप्तताक संकेत थिक। ओहिना अपहृत बालिकाक अन्वेषणमे स्वयंसेवक सबहक समस्तीपुर स्टेशनक अमला, मुली आदिक डेरामे जाएब सेहो सएह संकेतित करैत अछि। तकर कारण छलैक जे प्रशासनमे नियुक्त लोक केँ मिथिलाक संस्कृतिसँ कोने सरोकार नहि छलैक। ओ अपन स्वाथ–साधन टा देखैत छल। ओहिमे केहन आ' कोन प्रवृत्तिक लोकसब भरल छल, ओकर लक्ष्य की छलैक, तकरा स्पष्ट करैत 'मिथिला मिहिर' लिखैत अछि –

'या धरि मिथिलावासीकेँ भूमि छलैन्हि और पूर्ण उपजा होइ छलैन्हि ताधरि अपना शास्त्र विद्याक अनुशीलन छाड़ि विदेशी विद्याक अन्वेषण ओ सभ नहि कयलन्हि। जखन नव–नव अदालत, नव–नव आईन बनय लगलैक, वकील–मुखतार अदालतमे भरय लगलाह, देशमे नव–नव बिलायती वस्तु लय कय अपन–अपन देशक महाजन सभ पहुँचय लागल तखन नानाविध मिथ्या प्रलोभनमे पड़ि मिथिलाक लो अपन पैतृक सम्पत्ति मुकद्दमेवाजी और फजूल खर्चमे क्रमशः नष्ट करय लगलाह। बङाली वकील तथा पश्चिमक महाजन और अमला लोकनि मिथिलाक भूमिपर अपन आधिपत्य जमाय लेलन्हि। मैथिलकेँ एहि दुर्दशामे प्राप्त होएबामे विशेष काल नहि लगलैन्हि। एही चालीस–पचास वर्षक भीतर ई दशा हमरालोकनिक भय गेल अछि जे आन देशक लोक आबि कय एतय प्रधान बनि गेल छथि और हमरालोकन अगण्यो भय गेल छी' (सरकारी कार्यमे मैथिल, मि.मि. 20 मई, 1916 ई.)।

गत शताब्दीक तेसर दशकक इसह राष्ट्रीय परिदृश्य छल। एही राष्ट्रीय परिदृश्यमे कालीकुमार दास ' गङास्नान (1929 ई.) लिखल। एहनहि सामाजिक स्थितिमे हरनन्दन ठाकुर 'सरोज' 'गङास्नान (1931 ई.) एवं 'भेड़िया धसान (1936 ई.) लिखल आ' एही पृष्ठभूमिमे 'चन्द्रग्रहण' लिखाएल। 'चन्द्रग्रहण' लिखबाक कारणकेँ स्पष्ट करैत किरणजी कहने छथि – 'ओहि समय तक ब्रिटिश सरकारक 'डिवाइड एंड रूल'क नीति बेस सफल भए गेल छलै। मुस्लिम सम्प्रदायकेँ खूब सनका देने छल। जेना–तेना अपन संख्या बढ़ाएब ओ सभ अपन लक्ष्य बना लेने छल। अपहरण कए धर्म परिवर्त्तन करबैत छल। स्त्रीगणक अपहरण बेसी होइत छलैक। मेला अथवा भीड़ आदिसँ अपहरण बेसी सुविधगर छल। ई समस्या ततेक सामान्य आ' दारूण छलैक जे हमरा आकर्षित कएलक। तेँ ऐहि समस्यासँ परिचय एवं प्रतिकारक लेल 'चन्द्रग्रहण'क रचना हम 'मैथिली सुधाकर'क हेतु कएल।' किन्तु एहि राष्ट्रीय परिदृश्यसँ अपरिचित एवं भिन्न प्रतिबद्धताक कारणेँ एक व्यक्ति (कांचीनाथ झा 'किरण' कुलानन्द मिश्र) अपहरणकर्ताक मुसलमान होएब एक संयोग मानि लेलनि। जखन कि मैथिल आँखिक अन्वेषण एवं विकासक प्रसङ अनेकहुठाम किरणजी स्वयं तुर्क–अफगान–मोगलक अत्याचारक विशद चर्च ऐतिहासिक परिप्रेक्षमे कएने छथि। विद्यापति सेहो लिखिए गेल छथि 'छोटओ तुरूका भभकी मार'।

कांचीनाथ झा 'किरण' ओना तऽ मैथिली साहित्य जगतमे एक गोट ख्यात कविक रूपमे चर्चित छलाह, मुदा हिनक रचना–वैविध्यक अनुशीलन–परिशीलन कएला उत्तर ई स्पष्ट होइत अछि जे हिनक रचना–धर्मिता आधुनिक मैथिली साहित्य मे आयामक वैविध्यसँ सम्पुष्ट अछि। दृश्य ओ श्रव्य साहित्यक कोनो विधाकेँ अवाच नहि छोड़ने छथि। संगहि मैथिली आन्दोलनक जे दशा–दिशा सम्प्रति दृष्टिगोचर होइछ तकरो संचालनमे ई महान सेनानीक रूपमे कार्यरत रहलाह।

किरणजीक मिथिलाक सम्भ्रान्त ब्राह्मण परिवारमे उद्भूत भेलाह। संघर्ष हिनक बाल्यकालेमे आरम्भ भेल आ शिक्षासँ लऽ कऽ वृत्ति प्राप्ति धरि ई निरन्तर संघर्षशीले रहलाह। बाधा–व्यवधान हिनक व्यक्तित्वकेँ क्रमशः उत्थापित करैत चल गेल।

किरणजीक रूपक–उपरूपक रचनामे विजेता तिद्यापति ओ जय जन्मभूमि मात्र प्रकाशित छल। ई दुनू रचना मैथिलीक ऐतिहासिक आदर्शेन्मुखी नाटकमे महत्वपूर्ण स्थान रखैत अछि तथा मैथिलीक एहि विधाक अमूल्य निधि थीक। एकांकी विधामे किरणजी प्रमुख रचनाकार कहल जाए सकैत छथि। एहि विधामे हिनक एगारह गोट अवदानक सूचना अछि, जाहिमे पाँचगोट मात्र प्रकाशित भेटल छल। ई पाँचो रचना मैथिली एकांकीमे मानदण्ड कहल जाए सकैछ।

प्राप्त कथाक आधार पर किरणजीकेँ प्रगतिवादी विचारधाराक महान कथाकार कहल जाए सकैछ। किरणजीक दुइ गोट उपन्यासक सूचना अछि। प्रथम चन्द्रग्रहण आ दोसर अभिमानिनी सरला। ओहिमे प्रथमेटा प्रकाशित भेटल छल। चन्द्रग्रहण मैथिलीक आरम्भिक उपन्यास थिक।

किरणजीक मूलतः कवि छलाह आ कविता हिनक मुख्य विधा रहलैन्हि, तथापि संख्याक दृष्टिऽे हिनक कविता अल्प अछि। मुदा जे अछि से नियामके काव्यधाराक प्रतीक। महाकाव्योकेँ ई अपन रचना–धर्मिताक आधार बनौलैन्हि। पराशर महाकाव्य एकर ज्वलन्त दृष्टान्त अछि।

आधुनिक मैथिली साहित्यकेँ गति प्रदान करबामे मैथिली आन्दोललक भूमिका विशिष्ट अछि आ किरणजीक आन्दोलनी व्यक्तित्व मैथिलीकेँ अग्रसारित करैत रहल।

किरणजीक व्यापक व्यक्तित्व ओ बहुआयामी कृतित्वक अनुशीलनक दिशामे प्रस्तुत कांचीनाथ झा 'किरण' – जीवन ओ साहित्य एक गोट प्रयास मात्र थिक। वस्तुतः किरणजी यावन्तो विधाक रचना कएने छथि, तकर परिवेश–गत स्थितिक अनुशीलनक हेतु पृथक–पृथक् ग्रन्थक प्रणयन कयल जाए सकैछ यथा–किरणजीक काव्यमे प्रगतिवादी विचारधारा, किरणजी नाटकक पात्र, किरणजीक शोध–प्रबन्ध : सहमति–असहमतिक बिन्दु, किरण साहित्यमे दलित भावना, किरण साहित्य मे नारी–विमर्श आदि। तथापि प्रस्तुत कएल मे हिनक व्यक्तित्व ओ कृतित्वक जे आलोचनात्मक अध्ययन प्रस्तुतकएल गेल अछि ताहिसँ मैथिली भाषाक एक विशिष्ट काल–खण्डक विशिष्ट कविक रचना–धर्मिताक विभिन्न आलोकमे अनुशीलन संभव भए सकल अछि। 5

संदर्भ ग्रंथक सूची–

(1) कांचीनाथ झा 'किरण' भारतीय साहित्यक निर्माता, साहित्य अकादेवी प्रथम प्रकाशन – 1998 ई० ले० आनन्द मिश्र प्र० 25.

(2) चन्द्रग्रहण, 'किरण' मैथिली साहित्य–शोध–संस्थान. प्रथम. 1932 द्वितिय–2013 ई० सम्पादक डा० रमानन्द झा 'रमण' प्र० 5,6,7.

(3) कीर्तिरश्मि किरण एकता प्रकाशन नई दिल्ली . 2017 . प्र०– 242

(4) उद्यान किरण 'किरण मैथिली साहित्य – शोध – संस्थान, धर्मपुर, दरभंगा, 2017. अंक – 05. प्र० 22.

(5) किर्ति किरण साद्रित्यिकी सरिसबपाही मधुबनी. 2007. प्र० – 24